International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, RJIF (Impact Factor) 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 1; January 2016; Page No. 10-12

मीरा की भक्ति भावना

अजय कुमार सिंह

एम॰ए॰ (हिन्दी), एम॰ ए॰ (जर्नलिज्म), एम॰ एड॰, एम॰एस॰सी॰, एम॰ फिल॰, नेट, बुराड़ी, दिल्ली–110084

सारांश

मीरा मध्यकालीन भक्त कवयित्री हैं। उनकी कविता में भक्तिभावना की अभिव्यक्ति हुई है। मीरा की भक्ति प्रेम रसमार्गी थी। नाभादास का मीरा के प्रति कथन है – ''मीरा ने प्रेमभाव की भक्ति की थी। उनका प्रेम यथा ब्रजगोपिका नाम था और उनके प्रेम का आलम्बन श्रीकृष्ण थे।'' इनकी भक्ति माधुर्य भाव की थी। मीरा की रचनाओं में भक्ति की भावना उनकी विरह भावना से अभिन्न होकर अभिव्यक्त हुई है। मीरा की प्रेमाभक्ति में कहीं–कहीं वैराग्यमूलक दास्य भावना का समावेश भी देखने को मिलता है।

मीरा और कृष्ण के मध्य जो भावनात्मक संबंध था, वही मीरा की प्रेमाभक्ति थी, जिसे भक्तों एवं संतों ने स्पृहणीय और सर्वोत्तम माना है। मीरा के गीतों में यही प्रेमाभक्ति लक्षित होती है।

(1) 'प्रेम भगति से पैण, म्हारो और णा जांणोरीत''
(2) 'मीरा सिरि गिरधर नट नागर, भगति रसीली जाँची री''

मूल शब्दः– स्पृहणीय, भावजगत, सात्विक, माधुर्य, भवसागर, आत्मनिवेदन, ऐश्वर्यशाली, समस्यामूलक, भर्त्सना, परिप्रेक्ष्य, प्रामाणिक आदि।

भूमिका

मीरा राजस्थान के मेवाड़ राजघराने की बधू और मेड़ता राजघराने की कन्या थी। राजपूताना में विशेष तौर पर महिलाओं की आजादी पर अंकुश था। पति की मृत्यु के उपरांत पत्नी को आमतौर पर पति की चिता में कूदकर सती होने की प्रथा थी। लेकिन क्रांतिकारी विचार की मीरा ने इन सब बंधनों को तोड़ते हुए सती प्रथा का न केवल विरोध किया बल्कि वैधव्य जीवन जीते हुए राजमहल की चारदीवारी से बाहर निकलकर प्रेममय भक्ति में लीन होते हुए श्रीकृष्ण को पति रूप में न केवल स्वीकार की बल्कि श्रीकृष्ण को रिझाने के लिए शृंगार भी करने लगी। इन सबसे परिवार के लोग रूष्ट भी हुए और उनका देवर तो विष का प्याला भी मीराबाई के लिए भेज दिया।

विभिन्न समस्याओं और कठिनाईयों को झेलते हुए मीराबाई सामाजिक और धर्मिक दोनों परंपरागत बंधन को तोड़ते हुए नई राह पर चलने का साहसिक कदम उठाया। मीरा हर प्रकार से दुःखी रहीं। उनका जीवन चिर विरहमयी रहा। जीवन में वह जो न पा सकीं उसे वह भक्ति में पाना चाहती है, किन्तु जीवन दर्द भुलाए नहीं भूलती। अतः संयोग का गीत गाते–गाते मीरा विरहमयी हो उठती हैं। भक्ति में भी उन्हें चैन नहीं। उन्हें कुल–कलंकिनी कहा जाता है। उनकी हत्या का षड्यंत्र होता है। इसलिए मीरा ने भक्ति के लिए जिस प्रेम की साधना की, वह प्रेम बराबर समस्यामूलक रहा। मीरा के पदों में जो उल्लास है, वह भक्ति की देन है और जो वेदना है, वह जीवन से प्रसूत है। मीरा के जीवन की अनंत कठिनाईयाँ उनकी काव्य में प्रस्फूटित हुई है। मीरा के इन्हीं भक्तिभावना की पड़ताल करने की एक कोशिश है।

अध्ययन का उद्देश्य

भक्तिकालीन महिला कवयित्री के रूप में जो स्थान मीराबाई को मिलना चाहिए वह स्थान किन्हीं कारणों से उन्हें नहीं मिल सका है। राजकुल में पली–बढ़ी होने के कारण उनकी छवि को रमणी या सुंदरी रूप में ही निर्मित किया गया है। मीरा की काव्य पड़ताल कर उनकी इस निर्मित छवि से बाहर निकालकर प्रेम में पगी भक्त की ध्वनि को प्रदर्शित करने का उद्देश्य है।

शोध पद्धति

मीरा से संबंधित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्र–पत्रिकाओं तथा पुस्तकालयों से समग्री एकत्र करना व अध्ययन करना। इसके अलावे सहयोगियों, मित्रों व विभिन्न कृष्ण भक्त संतों से संपर्क कर सामग्री संकलित करना।

मुख्य विषय

मीरा की भक्ति को किसी एक पंथ या परंपरा के अंतर्गत रखकर नहीं समझा जा सकता है। क्योंकि मीरा की भक्ति केवल बंधी–बंधाई लीक पर चलनेवाली भक्ति नहीं, समाज और परिवार से विद्रोह है। इसलिए डॉ॰ विश्वनाथ त्रिपाठी, प्रो॰ मैनेजर पाण्डेय, कुमकुम सांगरी तथा परिता मुक्ता आदि विद्वानों ने मीरा की भक्ति को तत्कालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में रखकर देखा है, जिसमें तत्कालीन सामाजिक रीति–रिवाजों, रूढ़ियों में जकड़ी स्त्री का संघर्ष और मुक्ति कामना का द्वंद्व अभिव्यक्त हुआ है। मीरा की भक्ति में संयोग–उल्लास और विरह–व्यथा दोनों की मार्मिक अभिव्यक्ति है। मीरा के पदों में इस प्रकार संयोग–उल्लास और विरह व्यथा दोनों के रहने के दो कारण हैं। पहली बात तो यह है कि मीरा का प्रेम आध्यात्मिक है, किन्तु मेरा मत है कि उनका प्रेम अलौकिक होते हुए भी लौकिक है। **'गिरधर नागर'** स्थित भावजगत में है लेकिन जिन उपकरणों से उनका निर्माण हुआ है वे इसी जगत के हैं। वे मीरा के जीवन संघर्ष से उपजे हैं। आध्यात्मिक प्रणय मानसिक होगा, शारीरिक नहीं। उनका संयोग–वियोग मानसिक प्रतीति मात्र हैं। स्वभावतः भक्ति के उमंग में भगवान पास दीखता है, किन्तु भौतिक व्यवधानों के कारण वह पकड़ में नहीं आता और पास होकर भी दूर जान पड़ता है। दूसरा कारण यह है कि मीरा का वास्तविक जीवन दुखों से भरा था। बचपन में मां मर गई, जवानी में स्वयं विधवा हो गई। देखते–देखते पिता का सहारा भी छूट गया। देवर के अत्याचारों का पारावार न रहा। चिर विरहमय जीवन के कारण ही जो वह जीवन में न पा सकीं उसे भक्ति में पाना चाहती है। उनके समस्या मूलक प्रेम में जो अथक वेदना है और उस वेदना में जो अथक प्रेम है, वह इस तरह से व्यक्त हुआ।

'हे री मैं तो दरद दिवाणी, मेरा दरद न जाणै कोय।
सूली ऊपर सेज हमारी, सोना किस विधि होय।
सुख संपत्ति में सब मिलि आवै, दुख में बलम न कोय।
मीरा के प्रभु पीर मिटैगो, जब वैद सांवलिया होय।

हिन्दी में समस्यामूलक प्रेम का जैसा चित्रण मीरा बाई ने किया वैसा अन्य से नहीं हो सका। प्रेम के दर्द की ऐसी तस्वीर आंकने वाला भी दूसरा कवि नहीं हुआ। सम्भवतः पारिवारिक, सामाजिक क्लेशों, प्रताड़नाओं और निन्दा आदि बाधाओं के सम्मुख आने पर मीरा का अन्तस जब स्वयं को आश्रयहीन अनुभव करता होगा तब उन्हीं क्षणों प्रभु की सार्थकता, भक्तवत्सलता के समक्ष दया याचना करने की ओर वे प्रवृत हुई होंगी।

नारद भक्ति–सूत्र में भक्ति को द्विधा कहा गया है
(1) प्रेमरूपा और (2) गौणी

(1) प्रेमरूपा : कर्म, ज्ञान एवं योग से भी श्रेष्ठ **'प्रेमरूपा भक्ति'** को मान्यता मिली है। मीरा के गीतों में सर्वत्र प्रेमरूपा भक्ति का ही मूल स्वर बिखरा हुआ है। इस भक्ति में डूबकर मीरा पूर्णतया गिरधरमय हो गई थीं। सांसारिक राग, विषयों को विष सदृष ही त्याग दिया था। मीरा की यही प्रेमरूपाभक्ति निम्न पंक्तियों से गोचर होती है –

'भयाँ बावरा सुध बुध भूलाँ, पीव जाण्या म्हारी बात'
'इमरित पाई विषा क्यूँ दीजै'

प्यालो इमरित छाड़्या रे कुण पीवां कड़वां नीर पारी'
इस पंक्ति को प्राप्त करके भक्त समस्त सांसारिक बंधनों से मुक्त हो जाता है। वह सिद्ध, अजर और तृप्त हो जाता है।
अतः मीरा के गीतों से भी यही ध्वनित होता है कि वे प्रेमरुपा भक्ति का प्रसाद पाकर सांसारिक बंधनों से पूर्णतया मुक्ति पा चुकी थीं और सिवाय गिरघर के उनकी सारी आकांक्षाएं समाप्त हो चुकी थीं। अतएवं भातएवं मीरा की प्रेमाभक्ति का आलंबन जो कृष्ण रूप है, जिसमें उनके लोभी नयन अटके फिर वापस न आ सके, यानी उसी रूप में संलग्न रह गए, उसका अनुभव मीरा को जिस परिस्थिति में हुआ वह द्रष्टव्य है –

'म्हां ठाढ़ी घर आपणे मोइन निकल्यां आय' (पद 13) मीरा की पदावली

अन्य स्थान पर मीरा ने लिखा –

'कब री ठाढ़ी पंथ निहारां अपने भवन खड़ी (पद 14) मीरा की पादावली

अपितु कृष्ण से मिलन का अर्थ भावजगत में कृष्ण का मिलन। अर्थात साधु संगति में कृष्ण गुण कीर्त्तन। इस उद्देश्य की पूर्ति राणाकुल से बाहर आकर सामान्य जीवन में धुलने मिलने से ही हो सकती थी। मीरा ने लिखा –

'मीरा तो गिरधर बिन देखे, कैसे रहे घर बसि के (पद 7)

मीरा की भक्ति उतना ऐकांतिक नहीं है जितना समझ लिया जाता है। भक्ति के कारण वे सामाजिक हैं।

(2) गौणी भक्ति : मीरा के गीतों में गौणी भक्ति के उदाहरण बहुत कम मिलते हैं। गौणी भक्ति के गुणभेद के आधार पर (क) तामसी (ख) राजसी एवं (ग) सात्विक, भेद किए गए हैं। उनमें से केवल सात्विकी गौणी भक्ति मीरा में है। मीरा की एकमात्र कामना यही है कि –

'मीरा के प्रभु कब रे मिलेगां, थे विण रहया णा जाये।'

सात्विक भक्ति के अन्तर्गत मीरा ने अपने समस्त कर्म–फलों को भगवान के श्री चरणों में समर्पित कर दिया था। भवसागर से उद्धार की चिन्ता, लोक–लाज, भय सब कुछ अपने गिरधारी के प्रति समर्पित कर स्वयं निश्चित हो गई थी।
राजसी और तामसी गौणी भक्ति की मीरा को न तो आवश्यकता ही थी, न ही अवकाश।

गौणी भक्ति के आर्त्त विभेद के अन्तर्गत तीन भेद और किए गए है
(1) अर्थार्थी
(2) जिज्ञासु
(3) आर्त।

इनमें से मीरा में केवल आर्त भक्ति के उदाहरण ही मिलते हैं। साधन भेद की दृष्टि से भक्ति के दो भेद किए जाते हैं –
(1) अपरा और (2) परा

अतएव मीरा की भक्ति **'परा भक्ति'** के अन्तर्गत आती है। इस भक्ति में लक्ष्य की प्राप्ति ही सबकुछ है। इसके विपरीत **'अपरा'** भक्ति साधनों पर जोर देती हैं। मीरा की ही समस्त आकांक्षाएं, आशाएं और साधना का लक्ष्य प्रियतम श्रीकृष्ण की प्राप्ति है। अतः पराभक्ति ही मीरा की अभिप्रेत है। शास्त्रीय दृष्टि से पराभक्ति के छः भेद किए गए हैं–

(1) सिद्धा	(2) प्रेमलक्षणा
(3) निष्काम	(4) दुर्लभा
(5) अनन्या	(6) निर्गुण

ये सारे भेद मीरा के गीतों में मिल जाते हैं।

मीरा की नवधा भक्ति
मीरा की संपूर्ण पदावली पर विशद दृष्टि डालने पर नवधा भक्ति के प्रायः समस्त उपादान लक्षित होते हैं। श्रीमद्भागवत् में कहा गया है

"श्रवणं कीर्त्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनम्। अर्चनं बंदनं दास्यं सख्यमात्म निवेदनम्।"

अर्थात् श्रवण, कीर्त्तन, ईश्वर स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वन्दना, दास्यभक्ति, सख्य तथा अत्मनिवेदन। भक्ति इन्हीं नौ प्रकार की होती है। मीरा काव्य में नवधा भक्ति मौजूद है। मीरा ने भक्ति के सारे तत्व अपनाएं हैं। उनकी रचना में स्वाभाविक रूप से भक्ति के सारे रूप धुल–मिल गये हैं। सामान्यतः मीराबाई की सगुणोपासना संबंधी पदों को ध्यान में रखकर विद्वानों ने मीराबाई की भक्ति–भावना को वैष्णव परंपरा का माना है। वैष्णव भक्ति में भक्ति के छः अंग–आनुकुल्य–संकल्प, प्रातिकूल्य–वर्जन, गोप्तृत्व–वरण, रक्षण–विश्वास, आत्म निक्षेप, कार्पण्य माने गए हैं। इसी प्रकार भक्ति की सात भूमिकाएं – दीनता, मानमर्षता, भर्त्सना, भयदर्शन, आश्वासन, मनोराज्य तथा विचारण मानी गई है। कुछ विद्वानों का मानना है कि ये सब मीरा बाई की सगुणोपासना संबंधी पद किस परंपरा में आते हैं, यह अलग शोध का विषय है, परन्तु इतना स्पष्ट है कि मीरा के कृष्ण अवतारी हैं। उन्होंने द्रौपदी की लाज बचाई थी, प्रह्लाद के लिए नरसिंह रूप धारण किया था और डूबते हुए गजराज को उबारा था। यथा–

'हरि, तुम हरहु जन की भीर। द्रोपदी की लाज राखी तुरत बढ़ालो चीर
भक्त कारन रूप नर हरि धर्‌यों आपु शरीर हरिनकसिपु मारि लीन्हौं धर्‌यो नाही धीर
बूड़तो गजराज राख्यों कियों बाहर नीर। दासी मीरा लाल गिरधर चरण कंवल पै सीर।।

ये ही सगुण गिरिधर गोपाल मीरा के सबकुछ हैं, ये ही मीरा के स्वामी हैं यथा –

> ***मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरों न कोई जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।***

प्रासंगिकता

आज जब विभिन्न प्रकार के संत महात्माओं, साध्वियों ने भक्ति को बाजार में परिवर्त्तित करके भक्ति का व्यावसायीकरण कर रखा है व विभिन्न प्रकार के कुकृत्यों में संलग्न रहते हैं तो ऐसे समय में मीराबाई की भक्ति भावना की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। आज भारत में जहां आसाराम बापू, बाबा राम रहीम, बाबा रामपाल, बाबा नित्यानंद स्वामी आदि संत व राधे माँ जैसी तथाकथित साधिका समाज के आंखों में धूल झोंककर धार्मिक चोला पहनकर न केवल करोड़ों रूपये जमा कर रखे हैं बल्कि लोगों की धार्मिक भावना और आस्था का लाभ उठाकर भक्तों के साथ अनाचार में भी लिप्त पाया जा रहा है तो मीराबाई के संघर्ष व त्याग की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है।

विश्वनाथ त्रिपाठी के अनुसार पीड़ित नारीत्व को भूलकर मीरा की भक्ति को नहीं समझा जा सकता। मध्यकाल का पुरूषभक्त होने के लिए जाति–पांति, धन, धर्म, बड़ाई छोड़ता था, तो स्त्री को लोक–लाज, कुल–श्रृंखला तोड़नी पड़ती थी। मीरा ने अपनी भक्ति के माध्यम से संपूर्ण मध्यकालीन भारतीय नारी की व्यथा को व्यक्त किया है। प्रो॰ मैनेजर पाण्डेय कहते है ''कबीर, जायसी और सूर के सामने चुनौतियां भावजगत की थीं। मीरा के सामने भावजगत से अधिक भौतिक जगत की सीधे पारिवारिक और सामाजिक जीवन की चुनौतियां, कठिनाईयां थी। उस पुरूष प्रधान सामंती समाज में एक स्त्री, वह भी मेड़ता के राठौर राजपूत कुल की बेटी और मेवाड़ के महाराणा परिवार की बहू, ऊपर से विधवा। यही था मीरा का अपना लोक। उसके धर्म और उसमें स्त्री की स्थिति का अनुमान किया जा सकता है। लेकिन उसके विरूद्ध विद्रोह की कल्पना भी कठिन है। फिर भी मीरा ने उस आंतककारी लोक और उसके भयावह धर्म के विरूद्ध खुला विद्रोह किया। उस विद्रोह के साक्षी है उनका जीवन और काव्य।'' जबकि कुमकुम सांगरी ने मीरा की भक्ति पर प्रकाश डालते हुए अपने विस्तृत विवेचन द्वारा स्पष्ट किया है कि ब्राह्मणवादी व्यवस्था सूत्रबद्ध हैं, जिसमें एक चीज को मानने पर सारी चीजों को मानने के लिए बाध्य होना पड़ता है। मीरा बार–बार अपने पदों में कृष्ण को पूर्व जन्म का साथी और मीत बताती है और मीरा की प्रीति जनम–जनम की है। कृष्ण के लिए लौकिक जगत के बंधनों के अस्वीकार को, मीरा पूर्वजन्म की प्रीति के माध्यम् से सही ठहराना चाहती हैं। परिवार और कुल त्याग को मीरा माया का त्याग बताती हैं। मीरा की भक्ति शास्त्र सम्मत भक्ति है, जिसमें पूर्वजन्म, माया, सबका समावेश है। ब्राह्मणवादी व्यवस्था द्वारा बनाए गए ईश्वर के द्वारा ही मीरा राजसत्ता को चुनौती देती हे, इस प्रकार भक्ति मीरा के लिए शरणस्थली भी है और विद्रोह का माध्यम भी।

इसीलिए मीरा की प्रासंगिकता आधुनिक काल में और भी बढ़ जाती है जब समाज में विभिन्न प्रकार की समस्याएं नारी के सामने उपस्थित की जाती है। मीरा आज की नारी का प्रेरणाश्रोत बन सकती है।

निष्कर्ष

मीरा की भक्ति भावना पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि मीरा के गीतों में नवधा भक्ति के सभी अंग उपलब्ध होते हैं किन्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य है कि मीरा ने नवधा भक्ति के उदाहरण प्रस्तुत करने की दृष्टि से गीत रचना नहीं की थी, अपितु स्वमेव उनके गीतों में नवधा भक्ति के समस्त अंगों का सम्मिलन हो गया है। यही सहजता, स्वाभाविकता और अकृत्रिमता, गीतिकाव्य की अन्यतम विशिष्टता के रूप में मीरा के काव्य में चरितार्थ हुई है। अतः मीरा की भक्ति पर निर्गुण तथा सगुण मत को लेकर विद्वानों में मतभेद अवश्य रहा है, किन्तु मीरा के '**गिरधर नागर**' का जो रूप निर्मित हुआ है उस पर मूर्त्ति की निर्मात्री का बहुत गहरा प्रभाव है। 'गिरधर नागर' स्थित भावजगत में हैं, लेकिन जिन उपकरणों से उनका निर्माण हुआ है, वे इसी जगत के हैं। वे मीरा के जीवन संघर्ष से उपजे हैं। उस मूर्ति में मीरा की पीड़ा शामिल होकर रूपांतरित हो जाती है। अभाव ही समाप्त नहीं होते। विष बुझता ही नहीं, अमृत में बदल जाता है। इस तथ्य से स्पष्ट है कि डॉ॰ विश्वनाथ त्रिपाठी ही नहीं बल्कि डॉ॰ प्रभात, परशुराम चतुर्वेदी, मीरा के निर्गुणोपासना संबंधी पदों को प्रामाणिक मानते हुए भी उन्हें सगुणोपासक भक्त मानते हैं। डॉ॰ प्रभात ने अपने शोध–प्रबंध में प्रकाश डालते हुए माना है कि मीरा की समस्त साधना कृष्ण के सगुण–साकार अवतारी रूप पर ही केन्द्रित है। वस्तुतः यही रूप उनकी आराधना का एकमात्र लक्ष्य है। इसी प्रकार परशुराम चतुर्वेदी का मानना है कि मीराबाई द्वारा किए गए इष्टदेव के निर्गुण मत निरूपण तथा उसकी प्राप्ति के लिए प्रयोग में आनेवाली चारित्रिक साधनाओं के आधार पर कुछ लोग उन्हें संतमत की अनुयायिनी मान लेना चाहते हैं, किन्तु ऐसा कहना उचित नहीं जान पड़ता। मीरा ने अपने अनेक पदों में उक्त अविनाशी हरि, कृष्ण को ही परम ऐश्वर्यशाली एवं लीलामय भगवान के रूप में अंकित किया है। परिता मुक्ता वा मानना है कि ''मीरा की भक्ति शास्त्र और समाज की परंपरागत मान्यताओं से अलग है। मीरा राणा के लिए चूड़ी नहीं पहनतीं, श्रृंगार नहीं करती, जबकि विधवा होने पर भी कृष्ण के लिए सारा श्रृंगार करना चाहती है, पैरों में घूंघरू बांधकर कृष्ण को रिझाना चाहती है। अतः मीरा की भक्ति को उनके संघर्ष और विद्रोह से अलग करके नहीं देखा जा सकता''।

मीराबाई की कविता की विशेषता है, सच्ची अनुभूति, मार्मिक संवेदना और हार्दिक आवेग। चुंकी मीरा ने जीवन में दर्द पीया था, इसलिए वे दर्द का तलस्पर्शी वर्णन कर सकीं। '**दरद–दिवाणां**' का '**दरद**' अनुभूति अनिर्वचनीय हे। मीरा की वेदना सीधे उनके जीवन से है। इसीलिए मीरा की वेदना आत्मा की तारों को झकझोर देती है। मीरा की विरह–वेदना में जो मर्मस्पर्शी मार्मिकता है, उसका कारण सच्ची अनुभूति और निश्चल अभिव्यक्ति है। इस प्रकार मीरा के पदों में सगुण मत का स्पष्ट झलक है।

अतः कहा जा सकता है कि मीरा के यहां एक साथ अंशतः निर्गुण एवं सगुण भक्ति स्वरूप मौजूद है। '**गिरिधर नागर**' की भक्ति सबके प्रति एक सी है। यही मीरा की भक्ति की विशिष्ट पहचान है जो अन्य भक्त कवियों से भिन्न है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी गीतिकाव्य परम्परा और मीरा : सं॰ डा॰ मंजु तिवारी, पृ॰ 132, 133, 139
2. मीरा का काव्य : डॉ॰ विश्वनाथ तिवारी, पृ॰ 86, 57, 72
3. स्त्री चेतना और मीरा का काव्य : पूनम कुमारी, पृ॰ 97, 98, 205, 107
4. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य : मैनेजर पाण्डेय, पृ॰ 41
5. अपहोल्डिंग ऑफ कॉमन लाइफ दि कम्युनिटी ऑफ मीरा बाई : परिता मुक्ता, पृ॰ 33, 100
6. इकोनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली : कुमकुम सांगरी (7-14 जुलाई 1990) पृ॰ 1468
7. मीरा की पदावली : पद 13, पद 14, पद 7